

कवर चित्र नं. 2 (लक्ष्मी-नारायण):-

आज के समस्याओं भरे युग में मनुष्य को अपने जीवन के लक्ष्य का पता नहीं है। वैज्ञानिक आविष्कारों के चलते मनुष्य ने कल्पनातीत प्रगति की है; लेकिन फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं है। आधुनिक शिक्षा मानव को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक, नेता या व्यापारी तो बना देती है; किन्तु उसे सच्ची एवं स्थायी सुख-शान्ति

Cover Picture No.2

कवर चित्र नं. 2

लक्ष्मी-नारायण

स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना

परमात्मा (परम+आत्मा) का परिचय

ज्ञान सागर, पतित पावन, सर्व के सद्गतिदाता, गीता ज्ञान दाता शिव भगवानुवाच :-

हे वरुण ! मैं नाम और रूप से ज्यारा व सर्वगामी नहीं हूँ। मेरा नाम 'शिव' है, रूप अत्यन्त ज्योतिर्बिन्दु है, अखंड ज्योति ब्रह्ममहात्वात् मेरा और तुम आत्माओं का निवास स्थान है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर देवताओं का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति शिव' भी कहलाता हूँ।

अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के साहाय्य में तुम उन में दिया प्रवेश करके मनुष्य सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का सहज ज्ञान तथा राजयोग सिखाकर तुम भारतीयों को पुनः पतित से सावन बना रहा हूँ। इस अद्वैतिक ज्ञान और योग बल से स्वर्ग का वैकुण्ठ का सूर्यवंशी और नन्दवंशी देवी नन्दराज्य, जो भारत के कौशिल से बापु, गांधी जी चाहते थे, सो मैं पांडवपति, सृष्टि का बापूजी, ब्रह्मा मुखवशावती शिवशक्ति-पांडव सेना द्वारा स्थापन कर रहा हूँ।

साथ ही साथ महादेव शंकर द्वारा प्रेरित होवनाहर कल्याणकारी, महामारी महामारत लडाई और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का महाविनाश करवाकर सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति या शांतिधाम जाने का द्वार खोल रहा हूँ।

एकज भूल

प्रिय वरुण ! 5000 वर्ष पूर्व महाभारत के समय मैंने ही अविनाशी ज्ञान सुनाया था जिसका वादनार शाश्वत श्रीमद्भगवद्गीता माया जाता है, परंतु भारतवासियों की सबसे बड़ी भूल यही है कि सर्वेश्वरमयी शिरामणि श्रीमद्भगवद्गीता पर मुझ ज्ञान-सागर, गीता-ज्ञान दाता, दिव्य यज्ञ विधाता, पतित-पावन, जन्म-मरण रहित, सदा मुक्त, सभी धर्म वालों के गति-सद्गति दाता परमेश्वर परमाना शिव का नाम बदल 84 जन्म होने वाले, सार्वभूम सम्मन, तोलड कला सम्पूर्ण, सतीशामन सतयुग के प्रथम राजसूय और कृष्ण (जिनसे स्वयं इस गीता दाता यह पर पाता है) का नाम शिव कर भगवद्गीता को ही खंडित कर दिया है। इस कारण ही भारतवर्षी मेरे से योग भ्रष्ट हो, धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, पतित, कमाल, दुःखी बन गए हैं।

यदि भारत के विद्वान, आचार्य, पंडित यह भूल न करते तो सृष्टि के सभी धर्म वाले श्रीमद्भगवद्गीता को मुझ, मित्रांग धाम ले जाने वाले परदे (Liberator & Guide) परमेश्वर परमात्मा शिव के महावाक्य समझ कितने प्रेम और अद्भुत से अपना धर्म शाश्वत समझ पढ़ते और भारत को मुझ परमात्मा की जन्मभूमि (Gods Birth Place) समझ इसको अपना सत्त्वोत्तम तीर्थ स्थान मानते।

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के 84 जन्मों की सत्य कहानी शिव भगवानुवाच:-

प्रिय वरुण ! आज तो 5000 वर्ष पहले सतयुग की आदि में इस ही भारत पर पूज्य राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी और राजराजेश्वर श्री नारायण अटल, अखंड, निर्विघ्न, सम्पूर्ण, सुख-शांति सम्मन राज्य करते थे। स्वयंवर के पूर्व इन्हीं का नाम श्री लक्ष्मी और श्री कृष्ण था। वे स्वयंभू सम्मन, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अद्वैतिक थे। इन्होंने सतयुग के 1250 वर्षों में सूर्यवंशी देवता कुल में 8 जन्म लिए और जैतायुग के 1250 वर्षों में चंद्रवंशी कुल में राज्य-भाय्य सहित 12 जन्म लिए। द्वारपर और कलियुग के 2500 वर्षों में वैश्य-राजी शूद्र कुल में शिरोमणि नरत राजा-राजी अथवा प्रजा कुल में 83 जन्म लिए।

अब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग में श्री नारायण के अंतिम 84 वें जन्म के साहाय्य ज्ञान की वामनव्य अवस्था में मैं (निष्कार शिव परमात्मा) ने दिव्य प्रबंध कर इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा है और श्री लक्ष्मी का वर्तमान 84 वें जन्म ब्रह्मा मुखवशावती ब्रह्माकुमारी का है जिसका नाम मैंने जगदम्बा सरस्वती रखा है और कल्प पहले की तरह ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान सिखाकर, फिर से यह सतयुगी देवी दुर्गा, स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ की पुनः स्थापना कर रहा हूँ। यही प्रजापिता ब्रह्मा और उनकी मूल सत्त्वानु ब्रह्माकुमारी सरस्वती अपने तीसरे पुत्रवर्ष में नवमिय जन्म में फिर से यही सतयुग के पूज्य शिव महाराज नाराजराजेश्वर श्री नारायण और शिव महारानी राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी का प्रद प्राप्त करेंगे।

प्रिय वरुण ! अब मुझ शिव के बापूजी को सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शांति सम्मन सत्य देवी स्वराज्य स्थापन करने में जो कमल पुष्प गमन गुरुव्य-व्यवहार में रहते हुए देह सहित देह के सभी संबंधियों से बुद्धि योग तीज मेरे साथ योग्युक्त होंगे अर्थात् राजयोगी बनने और पवित्र रहने की महतिव्य आता कल्प (2500 वर्षों में 24 जन्मों तक सतयुगी सूर्यवंशी और जैतायुगी चंद्रवंशी कुल में ऐसा कर से नारायण और नारी से लक्ष्मी अर्थात् मनुष्य से देवता प्रद प्राप्त करेंगे।

(लोकलीन) मुख्य केंद्र
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव पवन, महारथ जालू, (राजस्थान)

(वर्तमान कालीन) अन्य आध्यात्मिक परिवार
आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

- दिल्ली: विजय नगर, पॉस्ट 606, काजी, कलिंग, वि. संख्या-110065
- श्रीलंका: 528A, विक्रमवारा, वि. संख्या-8 (30), 209-625
- कश्मिर: गिरि नगर, पॉस्ट 606, काजी, कलिंग, वि. संख्या-110065
- अहम: महरील, लौलनगर, वि. संख्या-144
- श्रीलंका: 854, कोलम, कोलम, वि. संख्या-46 C, पी. डब्लू, पश्चिमी (पश्चिम), 160-047
- कोलकाता: C.L. 249, सेक्टर 2, सतल-सेक्टर 2, कोलकाता (दक्षिण), 700091
- मुंबई: पटेल हाउस, अजयत शंकर, खलीदा, पी. काल, वि. नं. मुंबई (पश्चिम), 400-805
- हैदराबाद: 2501, H.L., बंगला, नगर, पी. केंद्र, हैदराबाद, हैदराबाद (पश्चिम), 500016
- मैसूर: शिवमूर्ति विद्यालय, 138 कर्नाट नगर,

स्वर्ग की रचयिता और उनकी दैवी रचना

सतयुगी देवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जगत्सिद्ध अधिकार है

स्वर्ग 1 से 2500 वर्ष

सतयुगी शिव महाराज श्री नारायण तथा शिव महारानी श्री लक्ष्मी स्वयंवर पूर्व महाराजकुमार श्री कृष्ण तथा महाराजकुमारी श्री राधा

ईश्वरीय संदेश

आने वाले 10 वर्षों में भारत से घटाना और विकारों का अन्त होने वाला है तथा होवनाहर विश्वयुद्ध के परचात् सतयुगी सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का राज्य शोध ही आने वाला है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों और ब्रह्माकुमार

की प्राप्ति नहीं करा सकती। अल्पकालिक

सुख-शान्ति पाने की जल्दबाज़ी में मनुष्य या तो

विषय-विकारों में फँस जाता है या फिर भौतिक

सुखों से विरक्त होकर संन्यासी बन जाता है

किन्तु सच्ची सुख-शान्ति, न तो विषय-विकारों से

और न ही संन्यास से प्राप्त होती है। वह तो केवल

गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए, ईश्वरीय ज्ञान एवं

राजयोग द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इसी सच्ची

सुख-शांति एवं पवित्रता से परिपूर्ण जीवन का

प्रतिनिधित्व करने वाले श्री लक्ष्मी और श्री नारायण

एवं उनकी दिव्य रचना को ही इस चित्र में चित्रित

किया गया है। दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा दिव्य

साक्षात्कारों के आधार पर बनवाए गए चार मुख्य

चित्रों में यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी शामिल है। इस चित्र में वर्तमान मनुष्य-जीवन के लक्ष्य अर्थात् 'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी' को चित्रित किया गया है।

चित्र के ऊपरी भाग में ज्योतिर्बिन्दु रचयिता शिव एवं उनकी सूक्ष्म रचना ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर को दर्शाया गया है, जिनके बारे में इस पुस्तक में बता दिया गया है कि ये तीनों ही स्वर्ग की स्थापना, पालना एवं

पुरानी दुनिया के विनाश अर्थात् परमपिता+परमात्मा के तीन दिव्य कर्तव्यों के निमित्त बनते हैं। जबकि त्रिमूर्ति के नीचे संगमयुग में लक्ष्मी-नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माओं और सतयुग में उनके दैवी सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले श्री राधे और श्री कृष्ण को चित्रित किया गया है। चित्र के शीर्षक में 'स्वर्ग के रचयिता' से अभिप्राय लक्ष्मी-नारायण है, न कि शिव; क्योंकि संगमयुग पर ज्योतिर्बिन्दु शिव से तो केवल ज्ञान का निराकारी वर्सा मिलता है। संगमयुग में परमपिता+परमात्मा के ज्ञान को सर्वाधिक धारण करने वाली दो सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ श्री लक्ष्मी एवं श्री नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं तथा विनाश के बाद जब सतयुग का आरम्भ होता है तब उनके द्वारा दादा लेखराज ब्रह्मा एवं ओमराधे सरस्वती की आत्माएँ ही श्री कृष्ण एवं श्री राधे के रूप में जन्म लेती हैं।

चित्र के मध्य भाग में लिखा गया है कि 'सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है।' अर्थात् जिस प्रकार विश्व के मात-पिता संगमयुग पर परमपिता शिव का दिया गया ज्ञान धारण कर नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं, उसी प्रकार हर मनुष्य यह ज्ञान धारण कर इसी जन्म में देवी-देवता बन सकते हैं; लेकिन इस जन्म में देवी-देवता बनने का यह अर्थ नहीं कि हम चित्र में दर्शाए गए लक्ष्मी-नारायण की भाँति आभूषण और वस्त्रादि प्राप्त कर लेंगे। यह आभूषणादि वास्तव में दिव्यगुणों के प्रतीक हैं। चित्र में संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण के चारों ओर जो प्रकाश दिखाया गया है, वह वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान एवं पवित्रता की लाइट है; किन्तु सतयुग में इनके द्वारा जो आत्माएँ राधे-कृष्ण के रूप में जन्म लेंगी, उनके केवल सिर के पीछे लाइट का ताज दिखाया गया है जो कि पवित्रता का सूचक है; क्योंकि विनाश के बाद परमपिता+परमात्मा का दिया गया सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है।

यहाँ एक और बात विचारणीय है कि चित्र में दर्शाए गए संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण विश्व-महारानी व विश्व-महाराजन होंगे; क्योंकि अंततः सारे विश्वधर्मों की आत्माएँ उनको अपना मात-पिता मान लेंगी; किन्तु विनाश के बाद मनुष्यों का संसार केवल भारत तक सीमित रह जाएगा ; क्योंकि अन्य सभी धर्मखण्ड 2500 वर्षों के लिए समुद्र में समा जाएँगे। विनाश के बाद सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले राधे-कृष्ण केवल भारत के 9 लाख देवी-देवताओं के लिए महाराजकुमार व महाराजकुमारी बनेंगे, सारे विश्व के लिए नहीं। हालाँकि यही राधे-कृष्ण बड़े होने पर लक्ष्मी-नारायण का टाइटिल (उपाधि) धारण करेंगे; परंतु वे विश्व-महाराजा या विश्व-महारानी नहीं कहला सकते; क्योंकि विनाश के बाद विश्व की अधिकतर आत्माएँ परमधाम लौट चुकी होंगी। अतः संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण ही सच्चे लक्ष्मी-नारायण हैं। इन्हीं सत्यनारायण की कथा आज भी भारत के हर घर में सुनी जाती है, जो झूठी दुनिया के झूठे ज्ञान की बातों से मुकाबला करते हैं।

सतयुग में हर मनुष्य देवी-देवता कहलाएगा तथा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम एवं डबल अहिसक होगा। जैसा कि चित्र में स्पष्ट है, वहाँ प्रकृति ही हर प्रकार से अपने स्वामी अर्थात् देवी-देवताओं की सेवा करेगी। वहाँ सदैव सदाबहार मौसम होगा। न हिसक जीव-जन्तुओं का डर होगा, न ही हिसक मनुष्य का। आत्मा और शरीर, दोनों ही पवित्र, सुन्दर और निरोगी होने के कारण न वहाँ डॉक्टरों की ज़रूरत होगी, न शरीर रूपी वस्त्र को सजाने के लिए किसी बाह्य साधनों की। चित्र में दिखाया गया है कि कृष्ण की दृष्टि राधे पर है और राधे की दृष्टि कृष्ण पर है। यह वास्तव में सतयुग और त्रेतायुग में देवी-देवताओं के बीच अखण्ड एवं अव्यभिचारी प्रेम का प्रतीक है। वर्तमान कलियुगी वातावरण के विपरीत स्वर्ग में अव्यभिचारी प्यार होता है, अनेक देहधारियों से सम्बन्ध नहीं होता। इसकी नींव संगमयुग पर ही पड़ती है, जब देवी-देवता बनने वाली आत्माएँ, ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के बाद, परमपिता से अव्यभिचारी सम्बन्ध जोड़ती हैं। इस चित्र के मध्य में 'ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार' की बात कही गई है अर्थात् परमपिता शिव संगमयुग पर इसी जन्म में हमें देवी-देवता बनाते हैं अर्थात् आत्मा और शरीर दोनों को ही पवित्र बनाते हैं। निकट भविष्य में, इस कलियुगी सृष्टि के विनाश से पूर्व ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग से आत्माएँ तो पवित्र बनेंगी ही; लेकिन विनाश के बाद देवी-देवता

बनने वाले जो मनुष्य बचेंगे, उनके शरीर भी उसी प्रकार कंचन काया वाले बन जाएँगे जिस प्रकार सर्प एक खल छोड़ कर दूसरी खल धारण करता है।

अतः अब जबकि संगमयुग के हीरे तुल्य समय में परमपिता शिव प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम भी घर-गृहस्थ में रहते हुए 'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी' बनने का पुरुषार्थ करें।